दिल्ली-इंद्रपुरी। 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के अंतर्गत सफाई करते हुए ब्र.कु. बाला, ब्र.कु. गायत्री, ब्र.कु. अभिनव, क्षेत्रीय भाजपा उपाध्यक्ष सोनिया सिन्हा तथा अन्य भाई-बहन।

गया-विहार। स्वच्छता अभियान के तहत विभिन्न स्थानों की सफाई करते हुए वार्ड पार्षद अशोक कुमार, ब्र.कु. शीला तथा अन्य भाई-बहनें।

टोंक-राज.। 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के तहत सिटी बस स्टैंड पर सफाई करते हुए ब्रह्माकुमारी ज तथा नेहरू यूथ क्लब के सदस्यों के साथ गणेश माहुर,डिस्ट्रिक्ट प्रेसीडेंट,भाजपा, ओमप्रकाश गुप्ता,डिस्ट्रिक्ट स्पोक्सपर्सन,भाजपा, ब्र.कु. रानी तथा नेहरू यूथ क्लब के राइटर तुलसीराम मीना।

हज़ारीबाग-झारखंड। 'स्वच्छता ही सेवा अभियान' के अंतर्गत साफ सफाई करते हुए मेयर रोशनी तिर्की, वार्ड पार्षद मीना प्रजापति, ब्र.कु. हर्षा, ब्र.कु. तृप्ति तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

वहल-हरियाणा। स्वच्छता अभियान के अंतर्गत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में सफाई करते हुए ब्र.कु. शकुन्तला, डॉ. अजय श्योराण तथा शहर के अन्य लोगों के साथ ब्र.कु. भाई बहनें। इस अवसर पर पौधारोपण भी किया गया।

जयपुर-राजापार्क। स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत नारायण सिंह सर्किल स्थित बस स्टैंड पर साफ-सफाई करते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें।

अनुभव

निःस्वार्थ व निष्काम सेवाभाव का अनुपम उदाहरण ब्रह्माकुमारीज़

मीडिया सम्मेलन के कारण मुझे पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन में आने का मौका मिला। यहां शांतिवन तथा माउण्ट आबू में आकर तीन दिनों में जो मैंने देखा और महसूस किया है, इससे मुझे लगता है कि ब्रह्माकुमारीज़ की ये एक अलग ही दुनिया है। जर्नलिस्ट होने के कारण मैं विदेशों में भी कई बार कई कार्यक्रमों में गया हूँ, लेकिन यहां आ करके जो मैंने देखा और समझा, वह कहीं नहीं देखा। यहां की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हज़ारों लोग ऐसे निःस्वार्थ भाव से सेवा में जुटे हैं जिस निःस्वार्थ सेवा के बारे में गीता में कहा गया है - कर्म करो लेकिन फल की इच्छा मत करो। ऐसा मुझे ब्रह्माकुमारी संस्थान के अलावा अन्य किसी जगह पर देखने को नहीं मिला। अगर निःस्वार्थ सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण कहीं मिल सकता है, तो वो ब्रह्माकुमारी संस्थान ही है।

मैंने ग्लोबल हॉस्पिटल एवं शांतिवन के जिस भी विभाग का चक्कर लगाया, जिससे भी बात की, उसने यही कहा कि मैं समर्पण भाव से कार्य करता हूँ अथवा समर्पित हूँ। मैंने डेवोटी शब्द तो पहले बहुत सुना था, लेकिन मुझे संसार में आज तक कहीं भी डेवोटी 'निःस्वार्थ भाव, समर्पण भाव वाले' मिले नहीं। लेकिन यहां ब्रह्माकुमारी संस्थान में मुझे एक नहीं, हज़ारों डेवोटी मिले हैं। जो देश और समाज हित के लिए केवल निःस्वार्थ एवं समर्पण भाव से सेवा कर रहे हैं। मैं इससे आल्हादित हूँ, बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

आप लोगों में ज़रूर ऐसी कोई अद्भुत शक्ति है, वरना किसी को अच्छे कार्यों की तरफ आकर्षित करना इतना आसान काम नहीं होता। दादी रतनमोहिनी जी से मिलने के बाद मुझे अद्भुत अनुभव हुआ और महसूस हुआ कि इनके दिव्य तरंगों के कारण ही इतनी सारी आत्मायें इस संस्था से जुड़ी हैं। मैं तो ये चाहूंगा कि सिर्फ बारह लाख ही न रहें, बल्कि देश के सभी एक सौ तीस करोड़ की पूरी आबादी इस संस्था की सदस्य बने। इस संस्थान से जितनी ज़्यादा बड़ी संख्या में लोग जुड़ेंगे, उन्हें आत्मा और परमात्मा के मिलन का लाभ मिलेगा। आत्मा और परमात्मा को लेकर जो भ्रमित हैं, उनका भ्रम दूर होगा। जीवन अच्छा होगा तो श्रेष्ठ समाज से बेहतर राष्ट्र का निर्माण होगा।

देवकी नंदन मिश्रा, संपादक,कानपुर

मुझे ब्रह्माकुमारी संस्थान के अलावा अन्य कहीं देखने को नहीं मिला, क्या? पता है आपको? वो निःस्वार्थ सेवा का प्रत्यक्ष प्रमाण, कर्म करो, फल की इच्छा ना करो की स्थिति। समर्पण भाव, निष्काम सेवा भाव का अनुपम उदाहरण। ऐसा कहना है दैनिक राष्ट्रीय सहारा के सम्पादक देवकी नन्दन मिश्रा का, जिनके ज़हन में ये अनुभव उतर गया।

प्रसन्नता

पेड़ हमारे जीवन को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। वे हमें प्राणवायु देते है, न सिर्फ हमारे स्वास्थ्य के लिए, अपितु हमारी खुशियों के लिए भी। वे हमारे लिए संदेश वाहक का भी कार्य करते हैं और हमारी जीवन ऊर्जा का ब्रह्माण्ड से भी नाता जोड़ते हैं। तभी तो आजकल सभी रिफ्रेश होने के लिए हरे भरे जंगलों और बगीचों में जाना पसंद करते हैं। जिससे सतरोताज़ा महसूस करते हैं।

हर मनुष्य हर पल किसी ना किसी पेड़ को प्रभावित कर रहा है। क्योंकि वह कार्बनडाइऑक्साइड गैस छोड़ रहा है और कोई ना कोई पेड़ उसे ग्रहण कर रहा है। ऐसे ही हर पल कोई ना कोई पेड़ किसी ना किसी मनुष्य को प्रभावित कर रहा है क्योंकि उस द्वारा छोड़ी गई ऑक्सीज़न गैस को कोई ना कोई मनुष्य ग्रहण कर रहा है। पेड़ और मनुष्य एक दूसरे के पूरक हैं। पेड़ मनुष्य की सोच से भी प्रभावित होते हैं।

छुई मुई के पेड़ के पास हाथ ले जाते ही वह शरमा कर सिकुड़ जाता है। इसीलिए हमें पेड़ों के प्रति अच्छा सोचना है। मनुष्य की सोच पेड़ों पर गहरा असर करती है। पेड़ हमारी सोच को ब्रह्माण्ड में प्रसारित कर देते हैं और ब्रह्माण्ड उसी अनुसार हमें फल देता है और वहाँ कोई पीपल का पेड़ है तो उसका फोटो खींच लो। उस फोटो को आप अपने पूजा के कमरे में, अपने इष्ट के साथ रख दो। जब भी पूजा करेंगे, भगवान को याद करोगे तो आपकी प्रार्थना, आपके विचार आपके इष्ट के साथ उस पीपल के पेड़ को भी जा रहे हैं। वह पेड़ आपके विचारों को एम्पलीफायर की तरह बढ़ा कर ब्रह्माण्ड में भेज रहा है।

अगर आप फोटो नहीं रखना चाहते हैं तो पार्क के किसी एक पेड़ या कई पेड़ों को दिमाग में रख लो। सभी राजयोगियों और दूसरे ईश्वर से प्रेम करने वाले बंधुओं को सुझाव है कि जब वह शिव भगवान को याद करते हैं तो किसी ना किसी पीपल के पेड़ को भी दिमाग में देखते रहें। इससे उनके संकल्प पेड़ों को भी शुद्ध करेंगे। पेड़ आपके शुद्ध विचारों को बढ़ाकर सारे ब्रह्माण्ड में भेज देंगे और आपको योग में बहुत अच्छा लगेगा। आपका मन पेड़ों के द्वारा भगवान से संदेश ले और दे सकेगा। विनाश के समय पेड़ों से हम संदेशों का आदान-प्रदान कर सकेंगे। अगर पीपल का पेड़ नहीं है तो आप और कोई चौड़े पत्तों वाला पेड़ ले सकते हैं। आप कोई भी पेड़ या सब्जियों के पौधे या दूसरे फसली पौधे भी ले सकते हैं। अगर आप घर में कोई फूलों के पौधे लगा सकते हैं तो लगा लें और उन गमलों में स्थित पौधों को योग की तरंगें देते रहो। वह पौधे भी आपके संकल्पों को बढ़ाकर ब्रह्माण्ड में भेजेंगे। आज राजयोगी जैविक खेती के बारे में बहुत कमाल कर रहे हैं। ऐसे ही हरेक व्यक्ति अगर किसी ना किसी पौधे के बारे में अच्छा सोचता रहे तो उस व्यक्ति की सोच तथा विश्व में क्रांतिकारी परिवर्तन आयेगा। जब भी रास्ते में कहीं कोई पेड़ या पौधा देखें, देखते ही उसके बारे में अच्छा सोचें। आप कल्याणकारी हो या कोई और अच्छा संकल्प करें। आपको बहुत अच्छा लगेगा।

मोकामा-विहार। स्वच्छ भारत अभियान के तहत मेन रोड चौक बाज़ार से गौशाला तक की सफाई करते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें। साथ ही शहर के एडवोकेट और समाजसेवी मनोज ने भी मिलकर सफाई अभियान में योगदान दिया।

बैरिया-उ.प्र.। 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के तहत सफाई करते हुए ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. समता तथा अन्य भाई-बहनें।